International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-08-2021, Accepted: 31-08-2021, Published: 16-09-2021
Volume 7, Issue 5, 2021, Page No. 34-35

महानगर की मैथिली' कहानी में अभिव्यक्त नारी

डॉ. श्रीकला. के. ऐ
असिस्टेंट प्रोफेसर, गवर्नमेंट विक्टोरिया कॉलेज, पालक्काड, केरल, भारत

सारांश
श्रीमती सुधा अरोडा स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी के क्षेत्र में एक अलग पहचान रखनेवाली लेखिका है। उनकी एक बहुचर्चित कहानी है 'महानगर की मैथिली'। प्रस्तुत आलेख में भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति पर विचार करते हुए वर्तमान युग की नन्ही बच्ची मैथिली की मानसिक व्यथा को उकेरा है।

मूल शब्दः नारी, व्यथा, मानसिकता, परिवार, वर्तमान युग, कहानी, पहचान

प्रस्तावना

मानव जाति के विकास का मूलाधार नारी है। मानव जीवन में नर-नारी अन्योन्याश्रित हैं। नारी शब्द की उत्पत्ति 'न'+'अरी' से हुई। यहाँ 'न' का मतलब 'नहीं' और 'अरी' का मतलब 'शत्रु'। अर्थात जिसको शत्रु नहीं है, वह नारी है।मानव समाज में नारी शब्द इस सामान्य अर्थ में ग्रहित नहीं है, क्योंकि उनका स्थान इससे बढ़कर हैं। माता, पत्नी, बेटी, भगिनी आदि सभी रूपों में पूजनीय होने के कारण उसे 'महिला' कहती है। नारी भव्य होने से रमणी कहलाती है, जन्म देनेवाली है, इसलिए जननी भी कहती है। उसे मानिनी और कामिनी भी कहती है। घर में पुरुष की अपेक्षा नारी पर अधिक दायित्व है। इसलिए वह 'गृहणी' भी है। पति द्वारा उसका भरण पोषण होता है, इसलिए वह भार्या है।

प्राचीनकाल से ही मानव जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष नारी के महत्व का प्रतिपातन करता था। वह आदिकाल से ही पुरुष के जीवन को सुन्दर, सुसंपन्न एवं खूबसूरत बनाने का प्रयत्न करती है। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान माँ एवं दैवी शक्ति के रूप में हमेशा ऊँचा रहा है। वेदयुगीन काल में भी नारी पूजनीय मानी जाती थी।

समय के बदलाव के अनुसार नारी से होनेवाले आचार तथा सम्मान की भावना धीरे-धीरे कम होती रही। मध्यकालीन युग में सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों के कारण समाज में उसका स्वातंत्र्य कम हो गया, वह एक भोग वस्तु बन गयी। बालविवाह, पर्दा, तथा अविद्या का अंधकार स्त्रियों केलिए अभिशाप बन गयी। इस समय स्त्रियों का कार्यक्षेत्र सीमित होकर घर की चार दीवारीयों में कैद हो गया। सती प्रथा का प्रचलन भी दिन पर दिन बढ़ गया।

स्वतंत्रता के पश्चात नारियों की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। नारी ने शैक्षिक प्रगति के फलस्वरूप अपनी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि की, वह कुंठा, निराशा, संवेदनहीनता, यांत्रिकता, बदलती नैतिकता, संत्रास, ऊब, और कभी न समाप्त होने वाली प्रवंचनाओं की श्रृंखला में जकडी ज़िन्दगी जीने केलिए विवश बन गयी। कथा साहित्य में इसका विस्तार दृष्टिगोचर होता है।1 "समाज के अनेक संबंधों का केन्द्र होने के कारण भारतीय नारी विशेषत: नवीन पीढ़ी की नारी में जो अस्थिरता उत्पन्न हुई उसने अतीत से चली आयी अनेक मान्यताओं को खंडित कर दिया है और अनेक समस्याओं को जन्म दिया है।"

वर्तमान युग में स्त्रियों की पारिवारिक स्थिति में सुधार आया और वह पुरुषों की सहयोगी बन गयी। हिन्दी कहानी तत्कालीन समाज के यथार्थ की अभिव्यक्ति देती है। आज का साहित्यकार नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की सत्ता को पहचान लिया है। समाज में उसकी गणना एक अलग इकाई के रूप में करने लगे। इसका स्पष्ट झलक श्रीमती सुधा अरोडा जी की कहानियों में मिलती है। उन्होंने नारी जीवन के विविध पक्षों को सूक्ष्मता से पहचाना है। उनकी कहानियों में शिक्षित मध्यवर्गीय एवं नौकरीपेशा नारी के भावात्मक संघर्षों, चारदीवारों में पडी औरत की मनोव्यथा, निम्न वर्गीय महिलाओं की समस्यायें आदि का चित्रण भी है।

'महानगर की मैथिली' कहानी की नायिका चित्रा है। लेकिन कहानी के केन्द्र में उसके पाँच साल की बेटी मैथिली है। कहानी की मैथिली का बीजबपन' तो वास्तव में अपनी बडी बेटी के सवा महीने पर ही हुई है, जिसे चाची के हाथों सौंपकर सुधाजी पति के साथ मांडू

समांतर साहित्य सम्मेलन में भाग लेते गयी थी। उस दुखमय वातावरण में सुधाजी के मन में उभरा पात्र है मैथिली, जो वास्तव में अपनी बेटी गरिमा है। मैथिली हफ्ते में रविवार को अधिक पसन्द करती है। नौकरीपेशा माँ बाप की संतान होने के कारण रात ही वह माँ के साथ रह सकती है। बाप को गुरुवार छुट्टी मिलती है तो माँ को रविवार। ऐसी हालत में दोनों पति-पत्नि उसे साथ लेने बिना सिनेमा जाती है। उस समय की उसकी मानसिक व्यथा का वर्णन सुधाजी ने अत्यंत मार्मिक ढ़ंग से किया है। मैथिली अपनी आयू से भी समझदार है।मानसिक व्यथा को अपने मन में सिमटकर, बिना रोये या हठ करके गुमशुद रहती है। उसे किसी से शिकायत नहीं। उसकी बहुत तेज़ बीमारी के अवसर पर छुट्टी लेने केलिए माँ-बाप के बीच हुए तर्क तो उसके मन में गहरी चोटी लगायी। इस की प्रतिक्रिया इस प्रकार प्रकट करती है कि 2"मम्मी जाओ आफिस, पापा, जाओ आफिस। पापा जाओ आफिस! हम भी जाएँगे। हमारे जूते दो मम्मी! हम को मत पकडो, पापा.....।" ऐसी हालत

पर हमें संयुक्त परिवार का महत्व याद आयेगा। बदलते परिवेश में संयुक्त परिवार का विघटन और फलस्वरूप एकाकी परिवारों का जन्म महत्वपूर्ण है। लेकिन यह तो वर्तमान युग की भयंकर समस्या बन गयी है। कहानी की मैथिली की हालत यह सूचित करती है।

'चित्रा' तो मैथिली की माँ है। उसे अपनी पुत्री से अगाध प्रेम है। लेकिन नौकरीपेशा और एकाकी परिवार होने के कारण उसे अपनी बेटी को आया ताराबाई के हाथों में सौंपना पडता है। इस तरह सुधाजी ने स्त्री को केन्द्र में रखकर उसकी विविध मनोवृत्तियों, कुंठाओं, विषादों का सक्षम चित्रण किया है

संदर्भ सूची

1. महादेवी वर्मा- नये दशक में महिलाओं का स्थान- पृ,सं: 13
2. महानगर की मैथिली (रहोगी तुम वही)- सुधा अरोडा- पृ.सं: 28- रेमाधव पब्लिकेशन, उत्तरप्रदेश, 2007
3. हिन्दी के समकालीन महिला उपन्यासकार- डॉ. वेंकटेश्वर- अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपूर, 2002
4. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास- डॉ. बच्चनसिंह- राधाकृष्णन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
5. महिला उपन्यास लेखन एवं स्त्री विमर्श- डॉ.कीर्ति मिश्रा- समीक्षा प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010.